ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय

गीतांजली

प्रकाशक :—

श्री भगवान गोपीनाथ जी ट्रस्ट

खरयार, श्रीनगर, काश्मीर





ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय

गीतांजली



भगवान श्री गोपीनाथ जी

के

चरण कमलों में अर्पित

प्रकाशक :—

श्री भगवान गोपीनाथ जी ट्रस्ट

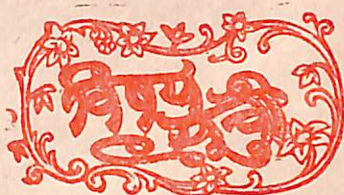
खरयार, श्रीनगर, काश्मीर

प्रकाशक—
भगवान् गोपीनाथ जी ट्रस्ट (रजि०)
खरयार,
श्रीनगर (कश्मीर)

संशोधक—
प्रो० चमनलाल सप्रू

मूल्य १-०० रु०

मुद्रक—
विट्ठल अग्रवाल
श्रीकृष्ण प्रिं० प्रेस,
ग्वालियर-१


विषय सूची



"श्रद्धांजलि" परम आदरणीय कविवर श्री सुमित्रा नन्दन पंत द्वारा इलाहाबाद में 'भगवान श्री गोपीनाथ जी मंडल' इलाहाबाद शाखा के उद्घाटन दिनांक २७-११-७६ के अवसर पर पढ़ी गई थी।

यह हमारा सौभाग्य है।

— भक्त-गण

भगवान श्री गोपीनाथ जी के प्रति

श्रद्धांजलि

ज्योति भूमि जय भारत देश।
ज्योति चरण धर विचरे प्रभुवर,
जहाँ विविध धर वेश।

समाधिस्थ सौन्दर्य हिमालय,
शुभ्र शान्तिमय, आत्म-तेज-मय,
गंगा यमुना जल ज्योतिर्मय,
हँसता जहाँ अशेष।

लौटे यहाँ धूलि पर ईश्वर,
राम कृष्ण गौतम का तन धर,
आये गोपीनाथ महात्मा,
लाए प्रभु सन्देश।

श्रद्धांजलि अर्पित करता मन,
मंगलमय हो दिव्य आगमन,
पावन करे धरा को उनके,
पद रज कण, हर क्लेश।
ज्योति भूमि जय भारत देश।

प्रयाग - २७-११-१९७६.

—सुमित्रानंदन पंत

॥ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय ॥

परिचय

भारत का शीर्षस्थान यह काश्यप ऋषि का काश्मीर अनादि काल से ऋषियों, मुनियों, सन्तों तथा सिद्ध पुरुषों का निवास-स्थान रहा है। कश्यप ऋषि की सुरम्य भूमि की प्रकृति जितनी मनोरम तथा आकर्षणीय है। उस से अधिक यहां के ऋषियों, सन्तों तथा सिद्ध पुरुषों की वाणी तथा उनकी पवित्र देह सुन्दर, मनोरम आकर्षणीय है। यहां का प्राकृतिक बाहुल्य, बौद्धिक विकास, उन्नत दार्शनिक विचार, यहां के लोगों की कायिक, वाचिक तथा मानसिक स्वच्छता संसार में प्रसिद्ध है। इन गुणों के कारण ही अब भी इस देश का नाम ऋषि वाटिका के नाम से पुकारा जाता है। यहां के असंख्य सिद्ध पुरुषों ने धर्म की पुनः स्थापना करने के लिये समय २ पर अवतार लेकर इस वाटिका की शोभा बढ़ाई है। इस शताब्दी में भक्तजनों को सन्मार्ग दिखाने के लिये तथा धर्म की पुनः स्थापना करने के लिये भगवान् श्री गोपीनाथ जी ने अवतार लिया। श्री भगवान् गोपीनाथ जी का पुण्य जन्म ३ जुलाई १८९८ ईस्वी को हुआ था। भारत के पुनरुत्थान तथा उसकी सुरक्षा हेतु उनका विशेष योगदान रहा करता है। भगवान जी का सारा कार्यक्रम गुप्त रहा करता था। भगवान् जी की जीवित अवस्था में तथा अब भी उनके दरबार से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटा है। बड़े बड़े विद्वान, उपासक तथा भक्तजन आप का स्मरण करने से सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं। आपकी दिव्यात्मा २८ मई १९६८ को महाज्योति में विलीन हो गई।

भगवान् जी अब भी भक्तों को सचेत करके उनके कष्टों को दूर करते रहते हैं। श्रीनगर में झेलम नदी के वैखरी विहार (खरयार)

के तट पर भगवान् जी के पुण्य आश्रम में स्थित उनकी पावन मूर्ति व पवित्र वस्तुओं के दर्शन करके भक्त लोग सन्तुष्ट हो जाते हैं।

हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये इस पवित्र स्थान की शोभा बढ़ाते रहें। प्रतिदिन सायंकाल को आश्रम में भक्तजनों द्वारा सामूहिक आरती उतारी जाती है। भक्तों द्वारा प्रस्तुत यह भजनों का संग्रह भगवान् जी के चरणों में सादर समर्पित है।

★ जै भगवान ★



आभार

मैं पिछली गर्मियों में काश्मीर गया एवं वहां भगवान श्री गोपीनाथ जी के आश्रम में जाने का सौभाग्य मिला। संयोग वश मैं शाम को वहां पहुंचा, अस्तु रात्रि संध्या आरती में मैं सम्मिलित हुआ। उस आरती में सम्मिलित होते ही मेरे अन्दर एक अपूर्व आत्म शान्ति का अनुभव हुआ। और मुझे ऐसा लगा, जैसे भगवान श्री की कृपा-दृष्टि मुझे मिली हो। तत्पश्चात भजनों के समय वहां के वातावरण से मैं आत्म-विभोर हो उठा।

वहां मेरे मन में ये भावना आई कि इन भजनों का संग्रह प्रकाशित होना चाहिये और उसके लिये मैं श्रीमान् शंकरनाथ जी फोतेदार सा. एवं श्री युत प्राणनाथ जी से, जो वहीं मौजूद थे, चर्चा की। मुझे आश्चर्य हुआ कि वे लोग भी इस संबन्ध में पूर्व ही विचार कर चुके हैं और कुछ साहित्य इकट्ठा किया जा चुका है।

उन्हीं भगवान के आशीर्वाद से यह संग्रह मेरे साथ ग्वालियर आया और इतर भाषी होते हुये भी हिन्दी लिपि में यहां के श्री कृष्ण प्रिन्टिंग प्रेस से मुद्रित होकर आप भक्त जनों के हाथ में है। संग्रह में मानव स्वभाव जन्य त्रुटियां अवश्यंभावी हैं। पाठक वृन्द उसके लिये मुझे क्षमा करेंगे।

प्रकाशन हेतु जो सहयोग व आशीर्वाद मिला है। उसके लिये श्री मान् शंकरनाथ जी फोतेदार, श्री प्राणनाथ जी, आश्रम के भाई बहिन भक्तजन एवं लेखक गणों का मैं हृदय से आभारी हूं। तथा मुद्रक महोदय श्री विट्ठल अग्रवाल का, जिनके सहयोग से यह सम्पन्न हो सका। पुनः भगवान श्री गोपीनाथ के चरणों में श्रद्धानवत हूं।

जै भगवान गोपीनाथ !

दिनांक : २५-२-७७

रमेश चन्द्र शिवपुरी
बिरलानगर ग्वालियर-४

ॐ

॥ श्री गुरुवे नमः ॥

योगाभ्यास दृष्ट भर्गस्वरूपं
योगीन्द्राणामग्रगण्यं यतीन्द्रम्।
शिष्य ज्ञान वित्तदान वदान्यं
गोपीनाथं श्री गुरू नौमि भक्तया ॥

नित्य योगाभ्यास करने से साक्षात्कार किए हुए शंकर के स्वरूप वाले, योगियों में श्रेष्ठ तथा जितेन्द्रियों में प्रधान, अपने शिष्यों को ज्ञान रूपी धन देने में उदार चित्तवाले श्रीगुरु गोपीनाथ जी को मैं भक्ति से प्रणाम करता हूं ॥१॥

हारमाला कुक्षिकासर कंजं
ज्ञान गन्ध तोषित शिष्य वर्गम्।
स्व ज्ञानांशु नित्य संफुल्ल कायं
गोपीनाथं सद्गुरुं नौमि भक्तया ॥

हारमाला नाम वाली अपनी माता के उदर रूपी सरोवर में उत्पन्न हुए कमल स्वरूप वाले, ज्ञान रूपी सुगन्धि से प्रसन्न किए हुए ~~कमल स्वरूप वाले, ज्ञान रूपी सुगन्धि से प्रसन्न किए हुए~~ शिष्य पंक्ति वाले तथा ज्ञान रूपी किरणों से खिले हुए शरीर वाले श्री सद्गुरु गोपीनाथ जी को मैं भक्ति से प्रणाम करता हूँ। अर्थात्—

सरोवर में खिला हुआ कमल जिस प्रकार अपनी सुगन्धि से जनता को प्रसन्न करता है उसी प्रकार सद्गुरू महाराज अपने भक्तों को प्रसन्न करता है ॥२॥

नारायण बीज भवामर द्रुमं
स्वभक्त वाञ्छा परिपूर्त्ति तत्परम ।
स्वानन्द तुष्टि विनिवृत्त लालसं
गुरुं नमामो भगवन्तमीश्वरम् ॥

नारायण नामक पिता के बीज से उत्पन्न हुए कल्प वृक्ष स्वरूप वाले, अपने भक्तों की अभिलाषा की पूर्ति करने पर लगे हुए, स्व स्वरूप आनन्द की प्रसन्नता से दूर किये हुए विषय वासना वाले, ऐसे ईश्वर स्वरूप सद्गुरु भगवान को हम प्रणाम करते हैं अर्थात् जिस प्रकार नारायण की इच्छा से उत्पन्न हुआ कल्पवृक्ष समीप आए हुए लोगों की कामना को पूर्ण करता है उसी प्रकार स्वयं निस्पृह होकर भक्तों की कामना पूर्त्ति करता है ॥३॥

जनार्दनावाप्त सुशक्ति पातं
ज्ञान प्रभा धूत स्वशिष्य ध्वान्तम् ।
तमाखु पाने निरतं मुनीन्द्रम्
गुरुं नुमः शङ्कर हार्द सक्तम् ॥

जनार्दन नामक सद्गुरू से प्राप्त किए हुए शक्ति पात वाले, अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से शिष्यों के अविद्या रूपी अन्धकार को दूर करने वाले धूम्रपान पर लगे हुए, मुनियों में श्रेष्ठ भगवान शङ्कर

पर लगे हुए मनवाले, श्री गुरु महाराज को हम प्रणाम करते हैं ॥४॥

कश्मीर मध्य खरयार मन्दिरे
स्थितं सुरम्य स्फटिक शिलातनुम्।
स्व शिष्य वर्ग कृत सन्ततार्चनम्
गुरूं प्रणौमि भगवन्तमीश्वरम् ॥

काश्मीर के मध्य खरयार के मन्दिर में सुन्दर स्फटिक की बनाई हुई मूर्त्ति वाले अपने शिष्यों के द्वारा नित्य किए हुए पूजा वाले ईश्वर स्वरूप गुरु को मैं प्रणाम करता हूं ॥५॥

मोहान्धकारं निज ज्ञान भाभि-
र्धर्नन्तं शरण्यं शरणागतानाम्।
सम्मोहन कृष्ण प्रियं वरेण्यं
दयालु वर्यं भगवन्तमीड़े ॥

शरण आए हुए लोगों के अज्ञान रूपी अन्धकार को अपनी ज्ञान रूपी किरणों से दूर करने वाले, और शरणागतों की रक्षा करने वाले, सज्जन मोहनकृष्ण नामक शिष्य की प्रीतिवाले, वरण करने योग्य, दयालुओं में श्रेष्ठ भगवान गुरु की मैं स्तुति करता हूँ ॥६॥

भानु मुहल्ले बाल क्रीड़ा प्रसक्तं
स्वस्मिन् गेहे लब्ध वैराग्य रत्नम्।
सर्वं त्यक्तवा शंकर प्राप्ति लग्नं
त्याग स्वभावं भगवन्त मीडे ॥

भानु मोहल्ले में बालक्रीडा करने पर लगे हुए, अपने ही घर में प्राप्त किए हुए वैराग्य रूपी रत्न वाले, सारी अभिलाषाओं को त्याग कर शंकर की प्राप्ति पर लगे हुए, त्याग प्रकृति वाले भगवान गुरु को मैं नमस्कार करता हूं ॥७॥

धूम्र पान यंत्र शिरो, भूषित कर पंकजम् ।
नित्योपवास निरतं, गोपी नाथं गुरुं नमः ॥

धूम्रपान यन्त्र (हुक्का) की मस्तक (सिर) बनी हुई चिलम से चमकते हुए कर कमल वाले, सदा उपवास पर लगे हुए श्री गोपीनाथ सद्गुरू को हम प्रणाम करते हैं ॥८॥

शुद्ध चित्त भक्ति श्रद्धा क्रतु कर्म परायणम् ।
ज्वलदग्नि समीपस्थं, गोपीनाथं गुरु नमः ॥

शुद्ध मन भक्ति और श्रद्धा से नित्य अग्नि होत्री करने पर लगे हुए, चमकती हुई अग्नि के समीप ठहरे हुए सद्गुरु श्री गोपीनाथ जी को हम प्रणाम करते हैं ॥९॥

उष्णीष भ्राजन्मूर्धमानं, वस्त्रभ्राजत्कलेवरम् ।
सोहं जपा सक्त चित्तं जिताक्षं श्री गुरुमनुमः ॥

पगड़ी से सुशोभित सिर वाले, तथा वस्त्रों से शोभायमान शरीर वाले अजपाजप पर लगे हुए चित्त वाले सद्गुरू को हम नमस्कार करते हैं ॥१०॥

क्रीस्तोर्वसु नन्द वसु विध्वब्धे
शुचौ सिते भानु तिथौ कव्य व्हे।
सम्प्राप्त जन्मानम जन्म भक्तं
सिद्धार्थ कल्पं भगवंत मीड़े ॥

१८९८ ईस्वी आषाढ़ शुक्ल द्वादशी शुक्रवार को प्राप्त किए जन्म वाले, जन्मरहित, भगवान के भक्त बुद्ध भगवान के समान अहिंसा व्रत वाले की मैं स्तुति करता हूं ॥११॥

वसु रस नन्द विधु मिते ब्धे
ज्येष्ठे त्वाष्ट्र्यां भौम दिने मृगर्क्षे।
प्राप्ताप्त वर्गं म जपां जपन्तं
विदेह मुक्तं भगवन्त मीड़े ॥

१९६८ ई० ज्येष्ठ शुक्ल द्वितिया मंगलवार मृगशिरा नक्षत्र पर अजपाजप करते हुए प्राप्त किए हुए निर्वाण वाले जीवन्मुक्त भगवान श्री गुरू जी की मैं स्तुति करता हूँ ॥१२॥

राज्ञी मनु चिन्तन पूत मानस
श्री काठ जीव कृत भावनार्चनम्।
श्री शिव नाथानुग्रह परायणमं
भक्तानु कम्पाकरमीश्वरं नुमः ॥

महाराज्ञी के मंत्र के जप से पवित्र बने हुए मन वाले, काटजू

महोदय द्वारा भावना से की हुई पूजा वाले, श्री शिवना[illegible] जी के अनुग्रह पर लगे हुए, भक्तों पर दया करने वाले ईश्व[illegible] स्वरूप गुरू महाराज को हम प्रणाम करते हैं ॥१३॥

श्री प्रेमनाथ सह धर्मं चारिणी
भागीरथी नित्य कृतांघ्रिक्षालनम्।
तद्भक्ति श्रद्धा मृत हृष्ट मानसं
भागीरथी भावविदं गुरुं नुमः ॥

दर जाति के प्रेमनाथ की पत्नी भागीरथी से सदा धोए हु[illegible] चरण कमल वाले, उसकी भक्ति और श्रद्धा रूपी जल पी[illegible] से प्रसन्न चित्त वाले भागीरथी के भाव को जानने वाले श्री गुरू को हम नमस्कार करते हैं ॥१४॥

दर श्रीधर सद्भक्त कृत नित्य पदार्चनम् ।
श्रीधर भक्ति संसक्तं गोपीनाथं गुरुं नुमः ॥

दर जाति वाले सद्भक्त श्रीधर जी से नित्य किये हुए चरण कमलों की पूजा वाले, लक्ष्मीपति श्रीधर की भक्ति पर लगे हुए सद्गुरू गोपीनाथ जी को हम प्रणाम करते हैं ॥१५॥

जयकीशवरी शुभन प्राण कौल
जियालाल शंकरादि सुभक्तैः ।
प्रातः सायं पूजित पाद पद्मं
गोपीनाथं श्री गुरुं नौमि भक्तया ॥

जयकिशोरी, शुभन लाल, प्राण नाथ कौल, जियालाल और शंकर नाथ जाडू आदि भक्तवर्यो से प्रातः सायं किये हुए चरण कमलों की पूजा वाले सद्गुरु गोपीनाथ जी के शिष्य वर्ग को भक्ति से मैं प्रणाम करता हूं ॥१६॥

मल्ल गोपीनाथ कृत सेवयो तुष्ट चेतसम् ।
गोपीनाथ स्वरूपज्ञं गोपी नाथं गुरुं नुमः ॥

मल्ल जाति के गोपी नाथ ने की हुई सेवा से प्रसन्न चित्त वाले श्री कृष्ण के स्वरूप को जानने वाले सद्गुरू गोपी नाथ को हम प्रणाम करते हैं ॥१७॥

श्री शंकर प्रेरणया कृत स्तवाः
पीताम्बरेण बल भद्र सूनुना ।
ब्रह्म स्वरूपा गुरवो दयाल वो
गृह्णन्तु मातेव स्व बाल भाषितम् ॥

श्री शंकर की प्रेरणा से बलभद्र के पुत्र पीताम्बर ने की हुई स्तुति वाले, ब्रह्म स्वरूप दयालु गुरु, यह बालक की वाणी उसी भांति स्वीकार करें जिस प्रकार माता पुत्र की तोतली वाणी को सुनकर प्रसन्नता प्राप्त करती है ॥१८॥

स्तोत्र सन्मौक्तिक कहारः
पीताम्बर नाथ शास्त्रि गुंफितः ।

अलं करोतु श्री कंठं
गोपी नाथ गुरोः सदा ॥

हे गुरू गोपीनाथ जी ! आप सदा श्री पीताम्बर नाथ शास्त्री द्वारा गुम्फित स्तोत्र रूपी मोतियों के इस अच्छे हार को अपने सुन्दर गले में अलंकृत करें अर्थात धारण करें ॥१६॥



गुरु स्तुतिः

नारायणात्मजं शान्तं हारमाल्योदरोद्भवम् ।
भक्तानां रक्षकं धीरं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

नारायण सन्दिस शान्त गुब्रस
हार मालि युस ओस थन प्योमुत ।
भक्तिन रछु वनिस तस धीरस
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

ब्राह्मणं ब्रह्म तत्वज्ञं जन सन्मार्ग दर्शकम ।
निष्काम कर्मिणं सन्तं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

ब्रम्ह तत्व ज्ञानयिस ब्राम्हणस
तस लोकन हन्दिस वतु हावकिस ।
निष्काम कर्मायस तस सन्तस
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

अहर्निशं भक्ति योग प्राप्त शंकर दर्शनम् ।
अजपा जप संलग्नं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

रातस त दोहसु भक्ति योग किन्य
यम्य शंकर सुन्द दर्शुन पूर प्राव ॥
अजपा जप मन्त्र सुरन वोलिस
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

जितेन्द्रियं जिताहारं सम लोष्ठाश्म कांचनम् ।
मायातीतं महात्मानं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

इन्द्रिय यम्य ज़ेनि ब्येयि यम्य सोम
ख्यव हिशिय नज़र करन सुनस मिचि प्यउ ।
मायातीतस तस महात्माहस
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

देह स्नान विनिर्मुक्तं मनः स्नान परायणम् ।
सदात्म शुद्धि संयुक्तं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

तन नावनो वॅन यम्य दोहय जवय,
मन नाव-नो-वुन बारंबार ।
पवित्र आत्मा संस्तिसे देवस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

ईश कृपाप्त विज्ञानमष्ट सिद्ध्यनुगं मुनिम् ।
भक्त दत्त नव निधिं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

दय दयायि सूत्य प्रोव यम्य ज्ञान,
अष्ट सिद्धि ओस तस ऋषिस सीता ।
भक्तन नव निधि दिन वॉलिस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

गृहस्थमपि संन्यास व्रतितं ब्रह्मचारिणम् ।
त्रिकालज्ञं गुणातीतं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

गृहस्थस मंज़ सज़िथ सु सन्यासी,
ब्रम्हचर्य व्रतस प्यठ ओस थिर ।
त्रिकाल दर्शी यस तस गुणातीतस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

सिद्धासनस्थितं नित्यं प्रभुध्यान रतं बुधम् ।
परमेश्वर संलीनं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

सिद्ध आसनस प्यठ सुय ठॅहरिथ,
दय सुन्द ध्यान करान सु विद्वान ।
तस भगवानस सीँत लीन गॅमतिस,
गोपीनाथस करन छुस प्रणाम ॥

ज्ञान गंगा जल स्नान धौत मानस किल्विषम् ।
विज्ञानिनामग्र गण्यं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

ज्ञान गंगायि मंज़ श्रान करनॅ सत्तिन, सत्यय,
मन किय पाप यस छलनय आय ।
ज्ञॉनियन मंज़ तस बडिस ज्ञॉनियस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

स्व करस्पर्श सद् भक्त भव भीति विनाशकम् ।
सर्वजनहिते रतं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

च्यॉन्य अथ डालन सीँत भक्ति सुख छि प्रावान,
भय सोरुय तिमन दूर छुख करान ।
लोकन अथ रॅटि तस करन वॉलिस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

दृष्टि पातेन दुःखिनां रक्षतारं कृपानिधिम् ।
दुःखिभ्यः सुखदातारं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

अकि दृष्टिपात सीँत्य हे दया सागर,
दुःख करुथ दुःखियन हुन्द च्यय दूर ।
दुःखियन हन्दिस सुख दिन वॉलिस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

यज्ञ भस्म भक्त रोग हर्तारं शुद्ध चेतसं ।
रोग नाश करं वैद्यं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

यज्ञ भस्म सॅतिन नाशस छुख करान,
भक्तिन हन्दि सॉरिय रूग ।
रूगन गालबनिस तस हकीमस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

देश संकट काले यः कृतवान् लोकरक्षणम् ।
तं देश रक्षकं वीरं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

यलि यलि देशस संकट आव बनिथ,
तेलि तेलि कॅर तम्य लोकन रॅछ ।
देश रक्षाकारी बलवीरस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

राक्षसानां विनाशाय सैनिकाः येन प्रेरिताः ।
सेनाध्वदर्शकं शूरं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

राक्षसन हन्दि नाश करन बापथ,
सेनायि यमि करनय प्रेरणा ।
सेनायि हन्दिस तस वत हावकिस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

पवित्रे स्वाश्रमें संस्थं भक्तानां काम पूरकम् ।
अवधूत दशापन्नं गोपीनाथं नमाम्यहम् ॥

पवित्र वननिस आश्रमस प्यठ बिहिथ,
भक्तिन करान युस कामना पूर ।
अवधूत दशा प्रावन वॉलिस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ॥

काव्य पुष्पमयी पूजा गोपीनाथस्य पादयोः ।
कृता त्रिभुवनाख्येन शास्त्रिणा कृष्ण सूनना ॥

काव्य पोषव सॅति करमय म्य पूज़ा,
गोपीनाथ न्यन दोनॅ पादन ।
त्रिभुवन नाथन शास्त्रीयन म्य,
श्री कृष्ण सन्दिय टाठि गुबरनॅ ॥

...र,
...र सन्त सोन भविनय ... ॥२॥
....
...वीलॅ जॉरी बोज़ सन्मुख रोज़ ...
...कार त्यॉगिथ,
...गोपीनाथ आश्रम चोन ...वुठुख चॅ भगवानस ।
...नेश लोबुथ च्यॅ छुटकार,
...ण भक्तय दर्शनस ... ॥३॥
....

बब॒ भगवान हरे

बब॒ भगवान हरे, जय जय बब॒ भगवान हरे
भक्ति भाव॒ भक्तयन पनन्यन
दास॒ भाव दासन पनॅन्यन ।
प्रथ विज़ि कर अनुग्रह जय जय बब॒ भगवानॅ हरे ।

कीर्तन युस करि पज़ि मनॅ छयनॅ गछि् मूह ज़ाल निश
रयनॅ मॅय मंज़ मूल्य सु बनि नाव चोनुय युस स्वरॅ ।
जय जय ....

मोल मॉज़्य सोनुय छुख चॅय आय अस्य च्यय शरणे ।
परॅनॅय पनॅन्यन तल रछ असि संकटनि थरे ।।
जय जय ....

सेनायि हन्दिस तस वत हावा...नि मंज़ लोल ।
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ।।

पवित्रे स्वाश्रमें संस्थं भक्तानां काम पूरकम् ।
अवधूत दशापन्नं गोपीनाथं नमाम्यहम् ।।

पवित्र वननिस आश्रमस प्यठ बिहिथ,
भक्तिन करान युस कामना पूर ।
अवधूत दशा प्रावन वॉलिस,
गोपीनाथस करान छुस प्रणाम ।।

सास सियुर्क हयु छुय बजर आसतुन अजर-अमर च्य ।
भास मनि मंज़ प्रत्यक्ष असि वोन्यॅ पोश लागोय लोलरे ॥

जय जय ....

यस दया आसि चॉनी बबा, पोरि कति तस यमॅ दूत, ।
भूत प्रेत तसरुफ इत्य। दिक सोरिय गछन बॉवेर ॥

जय जय ....

रोज़ि अमर सुति वेशक यस कल्याण बनि चोनुय ।
चानि प्रभात तस ब्रोंठ कनि तुछत अदॅ काँह मा दरे ॥

जय जय ....

पाप शाप असि पॉपियन गाल, वाल पृथ्वी प्यठ बोर ।
मॅयि संसार क्यत विषयत हृदयस मंज़ॅ च् असि नेह ॥

जय जय ....

नार,

शूलहर योगीश्वरॅ सन्त सोन भविनय .... ॥२॥

वीलॅ जॉरी बोज़ सन्मुख रोज़

ङ्कार त्यॉगिथ,

दुठुख चॅ भगवानस ।

गोपीनाथ आश्रम चोन नेश लोबुथ च्यॅ छुटकार,

ण भक्तय दर्शनस अ .... ॥३॥

चानि समाॅज़ हँज़ बुनियाद आश्रमसॅय मंज़ लॅज्य ।
चॅज्य दुर्गत तॅ गृह पीड़ा, भक्तयन सारिनॅय घरे ॥
जय जय ....

दीवानि मसरूर दासव मंज़ दासा अख चोन
मोन भवसर तरि सुय युस आरती चाॅन्य न्यथ परे ॥
जय जय ....

— पं० द्वारिकानाथ मसरूर

सेनायि ह

गोप

पवित्रे स्वाश्रमें संस्थ
अवधूत दशापन्नं गोपी

पवित्र वननिस आश्रमस
भक्तिन करान
अवधूत दशा प्राव
गोपीनाथस म ॥

पादन प्रणाम सोन छुय बारम्बार

पादन प्रणाम सोन छुय बारम्बार,
बोज़ सॅ ज़ार बवॅ भगवानय ।
दामानॅ चोनुय रोॅटमुत छु असि तार,
बोज़ सॅ ज़ार बवॅ भगवानय ॥

गदूद्-बाग निशि ओस चोन आसन,
बासान ओसुख चॅ साक्षात शिव ।
वातान भॅखॅत्य चॅ निश आस्य गामो शहर
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥१॥

दून्या जॉलिथ आसान ओसुख मगन,
भगवानस सॉत्य राथ तय द्यन ।
चिलिमन चर्सा बॅरिथ गंडान रेह तॅ नार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥२॥

काम क्रूध लूभ मुह अहंकार त्यॉगिथ,
ज़ॉगिथ च्रूठुख चॅ भगवानस ।
समसारॅ क्यव फन्दव निश लोबुथ च्यॅ छुटकार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥३॥

हनि हनि वैराग्य द्राति सॉत्य च़टिथ मूल,
संन्यास दॉरिथ रुदुख स्थूल ।
मनि मंज़ पानय वनि ओय ओम्कार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥४॥

आवलनिसॅय मंज़ अॅस्य छिय पेमॅत्य,
गॉमॅत्य दु:खॅ सागरस मंज़ गीर ।
त्राव वॊन्य दृष्टि कर असि मोकुजार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥५॥

कीर्तण बोजनॅ त्र आॅसॅय स्यठा प्रय,
ओसुख गछ़ान तॅथ्य सॉत्यन लय ।
वातान च्य निशि आॅस्य कम कम फ़नकार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥६॥

गिरिया करान अॅस्य चान्यन पादन,
थाव वॊन्य लादन असि म्वकॅ लाव ।
नादन कन थाव कास असि अन्धकार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥७॥

गोपीनाथ चोन नाव क्याह छु सोन्दर,
मन्दर हृदयस मंज़ घरॅ चोन ।
व्यह नावथ चॅ तथ मंज़ बा व्यस्तार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥८॥

सन् ओस अरॅ हॉठ १९६८ ज़्येठॅ जूनॅ पछि दोॅय,
अन्त समय वोतुय छुय च्य जय।
आश्रम चोनुय थोवमुत छु खरयार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥९॥

अन्तर्ध्यान तमि दोह सपदुख च़ॅय,
भक्तॅव्य चान्यव तुलहय हुय।
वॅद्य वॅद्य अशि कनि खूनस लॅजिख धार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥१०॥

कोॅरमुत असि सॉतिस छुय वादॅ क़रार,
दाद्यन दवा असि कॉह छा यार।
सादन तॅ सन्तन छु सोन जय जय कार,
बोज़ सॅ ज़ार .... ॥११॥

देवानॅ मसरूरस आव फरमान,
शोलॅनावुन छुय च्य बब भगवान।
क़लमन कश कोॅड यलॅ गव गुफ़्तार,
बोज़ सॅ ज़ार बबॅ भगवानय ॥१२॥



दामानॅ रटनि आय चोन दरबार

दामानॅ रटनि आय चोन दरबार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥

सत्गुरु सानि असि कॅंछा यार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥

भक्तयन कोताह छुय चोन लोल,
च़ॅय छुख मॉज्य तय च़ॅय छुख मोल ।
कठिन्ये भवसरॅ कर असि पार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥१॥

इन्द्रयय सार्यय शोॅमरॉ विथ,
समसारॅक्य विषय तॅ भोग त्रॉविथ ।
अन्दरिय सारिनॅय कोॅरुथ संहार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥२॥

संसारॅ निश रूदुख च़ॅ निर्मल,
यिथॅ पॉठ्य स्यलॅ वॅथरस प्यठ ज़ल ।
ज़लनिश होॅख स्यल गव इज़हार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥३॥

रोशान सोनुय छुय सोन हाल,
वोॅलमुत छु गृहस्थॅक्य सर्पन नाल ।
पोशव कति कुनि छुनॅ म्वोॅकजार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥४॥

आय ॲस्य शरण कमि लोलॅ माये,
ववॅ सानि असि प्यठ थव चॆ सायॆ ।
आशावान छि ॲस्य असि दितॅतार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥५॥

शिष्य चॉन्य प्रथ कुनि देशस मंज़,
चानि पूज़ायि हुन्द करान छिय संज़ ।
प्रथ जायि चान्यन गुणन हुन्द प्रचार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥६॥

पादव तलॅ योॅस गर्द द्रायॆ,
औषधि सोॅय छि सानि कायायॆ ।
चलि दोद दग तमि सॉत्य बलि बेमार,
सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥७॥

दीवानॅ मसरूर करान गिरिया,
सत्गुरु नॅन्य वोॅन्य म्य हाव बारगाह ।
करॅनावतम युथ म्य बनि उद्धार,
स्युथ सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार ॥८॥

युस यूगीश्वर यूग ओस सादन

युस यूगीश्वर यूग ओस सादन,
पादन तॅम्य सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम ।
सुय सत्गुरू सोन असि थवि लादन,
पादन तॅम्य सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम ॥

शरणॅय आय अॅस्य तॅम्य सॅन्द्यन चरणन,
वर्णन कुस करि तॅम्य सॅन्द्य गुण ।
बरॅबुकॅ आमॅत्य छि बोज़ि फर्यादन,
पादन तॅम्य सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम ॥१॥

दून्या बोंठॅ कनि बस शोलॅ मारान,
दारान ओसुय सु शिवॅ सुन्द रूप ।
पूर्ण करॅवुन स्यान्यन वादन,
पादन तॅम्य सॅन्दयन छु सोनुय प्रणाम ॥२॥

सु कल्याणकारी भगवान बब सोन,
नुन्द बोन आसनस प्यठ शूबान ।
भक्ति भावॅ भक्तयन दिवान अहलादन,
पादन तॅम्य सन्द्यन छु सोनुय प्रणाम ॥३॥

त्ररणन हन्दि खावि हँज़ गर्द योसॅ छोनेयि,
स्त्रय बनेयि सान्यन दाद्यन दवा ।
स्वय गर्द नाश छुय करान अपराधन,
पादन तॅम्य सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम ॥४॥

गोपीनाथ योगीश्वर सन्तस,
छस माला फिरनस सॉत्य लय ।
जय कार बारम्बार छुस समाधन,
पादन तॅम्य सॅन्दद्यन छु सोनुय प्रणाम ॥५॥

दुःखॅ सागरस मंज़ छि अॅस्य पेमॅत्य,
गॉमॅत्य असि सारिनॅय मॅलित्य मन ।
आरॅ बर्यत्यन असि कन थवि नादन,
पादन तॅम्य सन्द्यन छु सोनुय प्रणाम ॥६॥

दासॅ भावॅ किन्य अॅस्य कलॅ नोॅमरॉ विथ,
त्रॉविथ पादन तल तस पान ।
वास क[illegible] असि म्यॅद्यन तॅ सादन.
घर सॅय मंज़ तस ओस वैराग ।
त्यॉगिथ सोरुय छाँडान शिव सॅय
तस त्याग शीलसॅय करिव प्रणाम
जायि जायि छाँडान ओस सद्गुरु-सॅय
कर दियम दर्शुन बन्यम अनुग्रह ।

सन्ताप, पाप, शाप, च़टान कटास सॉत्यिय,
ज्योति स्वरूपस छु सोन नमस्कार ।
क्षण-क्षण वाति सुय सान्यन दादन,
पादन तॅम्य सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम ॥६॥

सत्गुरू सँज आरति युस न्यथ करि,
सुय तरि यमि भवॅ सागरॅ अॅपोर ।
प्रथ विजि चटि पापन कमन तॅ ज़्यादन,
पादन तॅम्य सॅन्दयन छु सोनुय प्रणाम ॥१०॥

आश्रम तॅम्य सॅन्द्य प्रथ जायि छिय बनान,
तिम बनान सत्गुरू सुन्द गन्योव लोल ।
'मसरूर' गुल्य गॅरिडथ तिथ्यन दिलशादन,
पादन तॅम्य सन्चन छु सोनुय प्रणाम ॥११॥

प्र

—पं० द्वारिका नाथ मसरूर

[illegible] ...ानुय प्रणाम

सु कल्याणकारी भगवान बब सोन,
नुन्द बोन आसनस प्यठ शूबान ।
भक्ति भावॅ भक्तयन दिवान आहलादन,
पादन तॅम्य सन्चन छु सोनुय प्रणाम ॥३॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय

योगीश्वरं गुरुं वन्दे

●

भाव सान लोला मरिवसद्‌ गुरुसॅय,
भगवान बबसॅाय करिव प्रणाम ।

१. ज़न्मादोर तॅम्य हार जून पछिसॅय
त्यथ ऑस बाह ब्ययि शुक्रवार ।
१८९८ ईस्वी सनॅ सॅय
भगवान बब सॅय करिव प्रणाम

२. हारमाल माता आयि उलसन सॅय
नाराण बबनॅय ब्वॅर क्याह लोल ।
मान तॅम्य कर्यनय सूत्य सिद्धार्थ सॅय
भगवान बबसॅय करिव प्रणाम

३. बाल क्रीड़ा करॅन बानमहल प्रान्त सॅय
घर सॅय मंज़ तस ओस वैराग ।
त्यॉगिथ सोरुय छ्वाँडान शिव सॅय
तस त्याग शीलसॅय करिव प्रणाम

जायि जायि छाँडान ओस सद्‌गुरु-सॅय
कर दियम दर्शुन बन्यम अनुग्रह ।

अभिलाष पूर गव तस साधुशील सॅय
तस निष्काम सॅय करिव प्रणाम

५. साफा तस ओस प्यठ मस्तक सॅय
तनि प्यठ फिरना ओस शूभान ।
सोऽहं सोऽहं तस ओस मनॅ सॅय
तस स्थिर मन सॅय करिव प्रणाम

६. दोहन त रॉचन लगिथ उपवास सॅय
केवल चिलमा ऑस ज़ोतान ।
ॐ शब्द मुहरा तस प्ययि मन सॅय
तस अवधूत सॅय करिव प्रणाम

७. शुद्ध मन भक्ति भाव लगान यज्ञ सॅय
धून्या ब्रोंठ कनि शोलॅ मारान ।
देवता-ति प्राराण हवन भॉग्य सॅय
तस याग शीलसॅय करिव प्रणाम

८. आव यलि संकट कश्यप प्रान्त सॅय
योगाग्नि सॅत्यन तथ क्वरुन ग्रास ।
अद्वैत ऑसिथ लगिथ कर्म योग सॅय
योगाभ्यास सॅय करिव प्रणाम

९. खबरा न्यबर गॅयि कश्मीर प्रान्त सॅय
गोपी भगवान गय निर्वान ।

निर्लोभ निष्काम सायं काल सॅय
ध्यानीश्वरसॅय करिव प्रणाम

१०. ज़्येठ द्रुय मंगलवारि ज़ूनयपछि सॅय
मृगशिर तारा ऑस चमकान ।
१९६८ संवत्सरॅ सॅय ....
निर्वाण शीलसॅय करिव प्रणाम

११. भक्त आय लारान त्वोत दर्शन सॅय
अशिकन्यि म्वक्तय ऑस्य हारान ।
आरती लोलसान करॅख योगीश्वर सॅय
ब्रह्म स्वरूप सॅय करिव प्रणाम

१२. क्या करन कर्म तस कर्मातीत सॅय
हृदयस मंज़ यस आसि सोऽहम
ज्योति गयि मीलिथ ज्योति स्वरूप सॅय
जीवन मुक्तसॅय करिव प्रणाम

१३. कति आस्य धन द्यार तस निर्लोभ सॅय
लक्ष्मी ब्रोंठ कनि करान तस वास ।
कर कर्यम कृपा द्यिम म्य दानॅ सॅय
तस दान शीलसॅय करिव प्रणाम

१४. पीठा वुन्य वथन तस पीठेश्वर सॅय
वैखरी यारय क्याह शूबान ।

कृपा तसँज़ॅय विश्व - मराडल सॅय
भगवत रूप सॅय करिव प्रणाम

१५. वर्णन क्याह करव तस गुणातीत सॅय
युस ओस निर्लोभ व्ययि निर्गुण ।
नमो नमः तसॅन्दिस गुप्तै तप सॅय
कर्मातीत सॅय करिव प्रणाम

१६. गुरु सँज़ॅ स्तुति स्वर युस मन सॅय
तस कात पोरिय यमसुन्द भय ।
क्यह न स तॉर छ्य यति मुकलन सॅय
भगवान बब सॅय करिव प्रणाम

—जियालाल हुण्डू शास्त्री, भाग, रैणावारी श्रीनगर (कश्मीर)



॥ ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय ॥

॥ सद्गुरू वरतम् पादन तल ॥

सद्ग गुरू वरतम् पादन तल ॥

पाद चॉन्य अमल निर्मल कमल,

ध्यूर तथ मीलिथ तुलान शष्य दल ॥

काँस्य नस ज़ोन च्यानि योगुक बल,

सद्ग गुरू वरतम् पादन तल ।

त्र्यन अवस्थायन कुनुय च्य भास,

काम क्रोध लोभस करमुतच्यॅ ग्रास ।

अहं भाव नम्योमुत छु चरनन तल,

सद्ग गुरू ....

निर्मल शीतल छय च्य वाणी,

ओसुख च़ गुप्त रूप पूरदॉनी ।

भक्तन मुशकिलन कॅरुथ च्य हल,

सद्ग गुरू ....

पूर पॉठ्य ओसुख च़ द्वन्दातीत,

न लगान च्य गर्मी न लगान शीत ।

ज़लस मंज़ रूज़िथ ओसुख च़ ख्यल,

सद्ग गुरू ....

दूर्यि च्योन असि स्वपन भासान,
सन्मुख ब्रोंठ कनि छुख आसान ।
भक्ति चॉनि हंज़ गन्येयि असि कल,
सद्ध गुरू वरतम् ....

विषय विकारए कोरमुत च्य ज़य,
अपज़्युक पज़्युक ओसुय च्य पय ।
कर्म भूमिकाय वॅवथ धर्मच थल.
सद्ध गुरू ....

क्याह सुन्दर मूर्ति चॉन्य छि शूभान,
दर्शन सूतिय मन छु लूभान ।
वलिथ च्य पोम्बर रेशमुक पल,
सद्ध गुरू ....

ड्यकस प्यठ तिलका ज़च़ त्रावान,
वछस प्यठ माला क्याह छि शूभान ।
तुठ चॉन्य रच़ फल्य न्यत्र कमल,
सद्ध गुरू ....

शुद्ध शान्त भगवान चॅय दूर कर सुइ गम,
क्यानि भागायि गछि क्याह सना कम

छुय दयायि भरपूर च्योनुय खल,
सद्‌ गुरु ....

च़्य सोन सद्‌गुरु पालन वोल,
च़्य भवसर छुख तारन वोल ।
पॉन गोखा तॅरिथ सॉन्य थव स कल,
सद्‌ गुरु ....

भक्तयन चान्यन पज़रुक लोल,
दूयर्र च्योनुय गन्योमुत होल ।
त्युथ कर युथ वन्यख आनन्द फल,
सद्‌ गुरु ....

करख कमि वॉनी च्योन कीर्तन,
नाव च्योन मणि फुल मन म्योन पन ।
ज़ड वोनिय म्यानि दित च़्य बल,
सद्‌ गुरु वरतम्‌ पारन तल ।

गुरू सन्दि ध्यान सॅत्य लब्हन दय

जय-भगवान

गुरू सॅन्दि ध्यान् सॅत्य लब्हन दय,
सत गुरू भगवान गोपीनाथ जय ।
गुरू सन्ध्यन पादन गछ शरनय,
रटिथ मंज्ञ मनसॅय तसन्दि चरणय ।
दिल किस आईनस कासी खय,
सत गुरू भगवान गोपीनाथ जय ॥

गुरू सॅन्दि रागै भाग्य फोलनय,
सारी दुःख तै दादय चल नय ।
भय चली कालुक रोज़ख निर्भय,
सत गुरु भगवान गोपीनाथ जय ॥
मुखती प्रावक लबख परमदाम,
सुमरन गुरू सन्ज कर सुबह शाम ।
मोह मायायि सीत्य रोज़िय न लय,
सत गुरु भगवान गोपीनाथ जय ।
गुरू कृपाई बेई भावनाई सीत्य,
ज्ञान पंपोश फोलि धारनाई सॅत्य ।

वख परम धाम यहय वथ छय,
सत गुरु भगवान गोपीनाथ जय ॥

गुरू सन्ज़ आज्ञा ब्रह्म वाक्य ज्ञान,
पादन तसन्दिन पुशराव पान ।
। मन प्रसण च़लिथ वहय वय,
सत गुरू भगवान गोपीनाथ जय ॥

शुद्ध मन यलि गछ्ख शरणाय गुरू सय,
अचि़य न कोन्ड कन्डयन मंज ऑसिथ खोरसय ।
क्रय कर ज़गतस मंज़ बनी ज़य,
सत गुरू भगवान गोपीनाथ जय ॥

"प्रेयम" यलि रोज़िथ गुरू दयाये,
सोरगस मंज़ छय चोन जाये ।
गुरू कृपायि गछ़िय पापन च्चय,
सत गुरु भगवान गोपीनाथ ॥

—श्री प्रेमनाथ काश्मीर

च़: शमा छुख सोन

च़: शमा छुख सोन अस्य च्यॅन परवान:
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

गरि गरि विज़ि विज़ि छिय भक्ति सुमराण,
ध्यान चोन मनस मंज़ दारानो ।
भक्ति भावय छिय पाद चॉन्य पूज़ान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

त्रॅविथ घरबार प्रोवुथ खलवथ खान,
छांडनि द्राख पनुन जानानो ।
क्रय करिथ प्रय भरिथ लोवथन भगवान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

दय सन्ज़ लय थविथ पय रटुथ शक्तिवान,
लोलि मंज़ भगवान ललवानो ।
मॅरफतुक मय चोथ पननॅय मयखान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

तपस्याय चानि वाति कुस क्रयावान,
ख्यन चन रूसत्य मस्त आसानो ।

पॉरि लगोय अथ चानि मस्ती मस्तान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

कम कम साध सन्त करिथख हैरान,
वुछिथ चोन योगबल छि नमानो ।
दरशन चानि सॅति हरशस गछान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

सास बॅदि भक्ति भाव किन्य ईवान,
करिथ चोन दरशन लाभ तुलानो ।
चानि दरशन मनुक पंपोश फोलान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

सोख दोख दोशवै यकसान ज़ानान,
मायायि सॅति लय न थावानो ।
रटिथ मन तॅरिगस योग साधान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

द्यनिश सॉरी ऑस गुरु यकसान,
सारिनय समद्रष्ट वुछानो ।
न कांह पननुय तॅ न कांह बेगान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ॥

सत गुरु पनन्यन भक्तिन रछान,
साय ध्यठ पननुय थवानो ।
ई मंगान छिय च्यॅ गुरु ती छुख दिवान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ।।

भक्तिन मंज़ सृष्ट भक्त अख आसान,
नाव तस शंकर नाथ वनानो ।
च्यॅ पत सत गुरू गोमुत देवानो,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ।।

यलि ज़ांह भक्तिन मुशकिल छु ईवान,
शरण च्यॅ गोरस्य गछानो ।
कृपायि चॉनि सॅत दोख त दौदि चलान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ।।

भगवान स्वरुप छुख खरयार भासान,
पाद चोनि न्यथ "प्रेम" पूज़ानो ।
भक्ति भाव सत गुरू चॉनि गोण ग्यवान,
सत गुरू गोपीनाथ भगवानो ।।

—श्री प्रेमनाथ जतू काश्मीर

सॅत छय भक्तिन ही सत गुरू

सॅत छय भक्तिन ही सत गुरू चॅनिय,
गोश थव योगीश्वर सानि वॉनिये ।
रोज़ त सन्तुष्ट असि भक्तन सर्वदा,
अख नाव चोन सासन दाध्यन दवा ॥
च़ठ मायाज़ाल कर मेहरबॉनिये,
गोश थव योगीश्वर सानि वॉनिये ।

ही गुरुदेव हाव वथ अस्य सतची,
यहोय अख वर गुल्य गन्डिथ मंगान छिय ।
कर्म हीनन स्यज़ राव कर्म लॉनिये,
गोश थव योगीश्वर सानि वॉनि ॥

यथ सॉदरस कॅति लगि तार यी छु गम,
सत गुरू रठ वावस मंज नावि नम ।
चॉनिय आशा भवसर तारिये,
गोश थव योगीश्वर सानि वाँनिये ॥

वोजमॅच़ असि मोह अन्धकारण गटै,
सॅति काम क्रोध लूभ मूहच त्रटै ।

खत्र मच़ प्यठ संसारॅ अलवॉनिये,
गोश थव योगीश्वर सानि वॉनिये ॥

पज़ि मन गुरू सन्ज़ भक्ती यिम करान,
ध्यान दॉरिथ सुमरण छिय करान ।
क्याह छु समशय मूख्य धाम प्रावानिये,
गोश थव योगीश्वर सानि वॉनिये ॥

खरचारय भगवान चोन आश्रम,
भक्तिन चलान छिय तति दोख त गम ।
पाद चान्य पज़ि भावनायि पूज़ॅनिये,
गोश थव योगीश्वर सानि वॉनिये ॥

"रास्तगो" थव गुरू पादन सॅत्य लय,
गुरू दयाये प्रज़नावख पान दय ।
छुय यि संसार भ्रम तॅय फैनिये,
गोश थव योगीश्वर सानि वॉनिये ।

—श्री प्रेमनाथ जतू काश्मीर

❋ गुरु-वन्दना ❋

जय दक्षिणा मूर्ती, ॐ गुरु जय दक्षिणा मूर्ती।
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर, फैली जग कीर्ती॥
दृष्टिपात, संकल्प मात्र से जगती कुण्डलिनी।
क्रियावती क्रीड़ाएँ करती जायं न जो बरनी॥
षट्चक्रों को वेध ऊर्ध्व गति प्राणों की होती।
दिव्य मौन उपदेश जगाता, निष्ठा की ज्योती॥
निर्मल मन निष्काम भाव से शक्ती को ध्यावे।
ब्रह्मधाम कर प्राप्त छूट भव-बन्धन से जावे॥
करिय कृपा गुरुदेव ! दास को अटल भक्ति दीजे।
भुक्ति-मुक्ति कर दान दीन को पूर्णकाम कीजे॥
प्रतिपल प्रीति बढ़े चरणों में हो न कभी तृप्ती।
सात्विक भाव बढ़े क्षण-क्षण में बढ़े ज्ञान दीप्ती॥
जिनके दृढ़ विश्वाश चरण तजि आश नहीं दूजी।
निश्चय बनि अधिकारी, पावें महायोग पूँजी॥
गुरुपदपद्मपराग सुअंजन जो नयनन आँजे।
दिव्य दृष्टि कर प्राप्त, तापत्रय अर्धनिमिष भाँजें॥
कैसे करें प्रार्थना गुरुवर, हम सब अज्ञानी।
स्वयंसिद्ध शुभ साधन दीजे श्री गुरु विज्ञानी॥
ॐ गुरू जय दक्षिणा मूर्ती॥

क्षमा अस्तुति

कठिनिस सॅदरस तार दिन सॉतरे,
सत्गुरू च्य छुख ज़ागि महशूर,
अज्ञान मलकव नाव सॉन्यगीरमित्र,
सत्गुरू सॉन नाव तार स अपोर।
जै भगवन!



माहात्म्य-निदर्शन

कैवल्य धाम की महाशक्ति !
हे कौल साधना उच्च शिखर !
हे तन्त्र शक्ति महिमा मंडित !
है तुम्हें अचर चर सब गोचर ॥

धरती पर नन्दन वन के तुम !
सम्राट बने अभिराम नाम ।
हे त्याग-तपस्या-मौन शक्ति !
तुमको जब जन का है प्रणाम ॥

जन कोलाहल से बहुत दूर,
कुण्डलनी में करके निवास ।
तुम ताप त्रिताप हरा करते,
हे शैव शक्ति के मुक्त हास ॥

तुम 'गोपी' के हो 'नाथ' प्रवर,
सब ऋद्धि-सिद्धि के तुम दाता ।
हे अमर शान्ति प्रेरणा शक्ति,
तुमसे जन जीवन सुख पाता ॥

हे राष्ट्र शक्ति के संरक्षक !
हे सार्व-भौम सत्ता प्रहरी !

हे अन्ध बन्ध के विध्वंसक !
तुम जन मानस आस्था गहरी ॥

आशीष तुम्हारा पारस सा,
करता लोहे को है सोना ।
शरणागत सब कुछ पाता है,
उसको न पड़ा है कुछ खोना ॥

यश का कर्पूर सुवासित हो,
आप्लावित करता दिग् दिगन्त ।
तुम व्योम क्षितिज से हो असीम,
जिसका न कहीं है आदि अन्त ॥

—मुकुन्ददेव शर्मा



❁ हमारे त्योहार ❁

१- महा निर्वाण दिवस

(वार्षिक यज्ञ)

मिती ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया।

२- महा जयन्ती

(साधु भंडारा)

मिती आषाढ़ शुक्ल द्वादसी।

३- स्मृति दिवस

(कीर्तन)

मिती असूज कृष्ण द्वितीया।

